AKSHAR WANGMAY

International Peer Reviewed Journal

UGC CARE LISTED JOURNAL
October – 2021
Issue-IV, Volume-III

Chief Editor

Dr. Nanasaheb Suryawanshi

PRATIK PRAKASHAN, 'PRANAV, RUKMENAGAR, THODGA ROAD AHMEDPUR,
DIST. LATUR, -433515, MAHARASHTRA

Editorial Board

Dr. Mahendra S. Kadam
Dr. Netaji B. Kokate
Dr. Balasaheb V. Das
Mr. Zakirhusen B. Mulani

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors **Price: Rs.1000**

46	संत नामदेवांची नवविधा भक्ती	डॉ. प्रवीण कारंजकर	151-155
47	जागतिक सूचीमधील भारतीय लोककथा	भक्ती ओंकार प्रभुदेसाई	156-160
48	भाषा ,साहित्य ,संस्कृति और अनुवाद में सूचना और तंत्रज्ञान का प्रयोग	डॉ . रेशमा खान	161-162
49	दक्खिनी हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति	डॉ. हाशमबेग मिर्झा जावेद पटेल	163-165
50	गाहासत्तसई में चित्रित नारी और ऋतु वर्णन	प्रा. बालासाहेब गण पाटील	166-170
51	अनुवाद का स्वरूप, व्याप्ति एवं उपयोगिता	प्रा. एन. बी. एकिले	171-
52	इक्कीसवीं सदी में अनुवाद का महत्त्व एवं समस्याएँ	डॉ. नवनाथ सर्जेराव शिंदे	174-176
53	वैश्वीकरण से उलझते भारतीय संस्कृति	डॉ. जिन्सी जोसफ	177-180
54	हिंदी साहित्य एवं पर्यावरण का सहसंबंध	डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद	181-185
55	दाँड उपन्यास में भारतीय परंपरा और भूमंडलीकरण	प्रा. सिध्दाराम पाटील	186-187
56	अनुवाद : अर्थ, स्वरूप और नई चुनौतियाँ	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	188-191
57	वामाहतिक महाराष्ट्रातील सामाजिक बदल : एक दृष्टिक्षेप	प्रा.डॉ.दिगंबर शिवाजी वाघमारे	192

अनुवाद का स्वरूप, व्याप्ति एवं उपयोगिता

प्रा. एन. बी. एकिले

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग शिवराज महाविद्यालय साहित्य वाणिज्य एवं डी.एस.कदम विज्ञान महाविद्यालय, गडहिंग्लज जिला. कोल्हापुर,

वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहा जाता है। प्राचीन युग में मुख्य रूप से साहित्य, दर्शन और धर्म आदि रचनाओं का ही अनुवाद किया जाता था क्योंकि इन तीन क्षेत्रों में ही प्रायः ग्रंथों की रचना होती थी। वर्तमान युग में अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। जिसमें साहित्य, दर्शन और धर्म के अतिरिक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्साशास्त्र, प्रशासन, कूटनीति, कानून, जनसंचार माध्यम, विधि आदि जैसे अनेक क्षेत्रों के ग्रंथों और रचनाओं का अनुवाद हो रहा है। अनुवाद के संबंध में डॉ. रीतारानी पालीवाल ने लिखा हैं कि "मानव के पास आयु, समय और साधन की एक सीमा रहती है। हर व्यक्ति संसार की प्रत्येक भाषा नहीं सीख सकता। ऐसी स्थिति में अनुवाद ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम सभी भाषाओं से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।"[1] वर्तमान युग में देश के लगभग सभी श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों ने अनुवाद विज्ञान के महत्व को पहचानते हुए उसका समावेश पाठ्यक्रम में किया है। एक भाषा का शब्द दूसरी भाषा में रखना, इतना ही सीमित अर्थ अनुवाद का नहीं है। किसी साहित्य-कृति का निर्माण जिस तरह एक संज्ञापन-घटना है। ठीक उसी तरह अनुवाद भी एक संज्ञापन-घटना है।

अनुवाद का स्वरूप एवं अर्थ :

बीसवीं शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है। और इसी कारण इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है। संप्रेषण के नए-नए माध्यमों के अविष्कारों ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना को साकार बना दिया है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में अनुवाद की आवश्यकता है। साथ ही विश्व भाषाओं के अनुवाद की भी नितांत आवश्यकता है। अनुवाद एक साहित्यिक विधा होने हुए भी सृजनात्मक साहित्य की कोटि में नहीं आ सकता। क्योंकि अनुवाद स्रोतभाषा के पाठ्य सामग्री को लक्ष्यभाषा की पाठ्य सामग्री में अंतरित करने का माध्यम मात्र है। अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए हरिवंशराय बच्चन लिखते हैं कि "यूनानी विद्वानों ने कला के संबंध में जो सबसे बड़ी बात कही थी, वो यह थी कि कला को कला नहीं प्रतीत होनी चाहिए, उसे स्वाभाविक लगना चाहिए। इसी प्रकार अनुवाद को अनुवाद नहीं लगना चाहिए, उसे मौलिक लगना चाहिए। यह तभी संभव है जब सृजन में शब्द के स्थान को सूक्ष्मता से समझ लिया जाए। शब्द के स्थूल रूप और उसके कोश पर्याय को अंतिम सत्य मान लेने वाला सफल अनुवाद नहीं हो सकता। शब्द साधन है साध्य नहीं। साध्य तो वह भाव या विचार है जो पीछे है।"[2] स्पष्ट है कि सफल अनुवाद वहीं है जो भाव या विचारों के साथ जुड़ा है।अनुवाद के स्वरूप को 'अनुवाद' शब्द के व्युत्पत्तिमूलक एवं कोशीय अर्थ से स्पष्ट किया जा सकता है। अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष को जानने से पहले उसकी व्युत्पत्ति विषयक जानकारी को प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। 'अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'वद्' धातु से हुई है। जिसका अर्थ है 'बोलना' अथवा 'कहना'। इसी धातु में जब 'घञ्' प्रत्यय लगता है तो 'वाद' शब्द बन जाता है। और फिर उसमें 'पीछे' 'बाद में' 'अनवर्तिता' आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द बन जाता है। 'अनु' और 'वाद' के संयोग से बने 'अनुवाद' का शाब्दिक अर्थ है- 'पुनः कथन' या किसी के कहने के बाद कहना अर्थात् एक भाषा में अभिव्यक्त भाव एवं विचारों को किसी दूसरी भाषा में समान रूप से या उसके अनुरूप फिर से कहना अनुवाद है।

नालंदा विशाल शब्द सागर में अनुवाद का अर्थ एवं स्वरूप का विवेचन किया है- 'अनुवाद के लिए भाषांतरण, उल्था, तजुर्मा, पुनरुक्ति, दोहराना, पुनरूल्लेख, मीमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय को दूसरे शब्दों में दोहराना आदि दिया है।"[3]डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समतुल्य और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।" अन्य एक स्थान पर उन्होंने अनुवाद को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है, और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के

निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद 'निकटतम, समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन' या यथासाध्य समानक प्रतिप्रतीकन है।'[4] एक भाषा में व्यक्त भाव या विचारों को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना बड़ा ही जटिल कार्य है, क्योंकि प्रत्येक भाषा की अपनी एक अलग विशेषता होती है। उसकी अपनी एक अलग व्याकरणिक संरचना होती है। उसकी अपनी ध्वनि, रूप, वाक्य, शैली, अर्थ, लिंग, वचन, समास, पद, पदबंध आदि विशेषताएं होती है। अतः स्रोत भाषा में अभिव्यक्त भाव या विचारों को लक्ष्य भाषा में उसी रूप में प्रस्तुत करना सरल तथा आसान कार्य नहीं है। परिणामतः हर बार अनुवाद सफल ही होगा इसकी कोई निश्चितता नहीं है। कभी-कभी मूल पाठ का कथ्य अनूदित पाठ में कहीं अपेक्षाकृत विस्तृत तो कहीं संकुचित तो कहीं भिन्न रूप में परिवर्तित हो जाता है।

अनुवाद की व्याप्ति एवं उपयोगिता :

वर्तमान युग में अनुवाद सर्वाधिक चर्चित मुद्दा रहा है। आज संपूर्ण विश्व को एक सूत्रता में बांधने तथा मानव जाति को एक दूसरे के निकट लाने में और मानवीय जीवन को सुखी और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान परिस्थिति में शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहां अनुवाद की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। अनुवाद के माध्यम से हम केवल भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य से ही परिचित नहीं होंगे बल्कि विश्व साहित्य की परिकल्पना से भी परिचित होते हैं। अनुवाद चिंतक डॉ. जी. गोपीनाथन अनुवाद के संबंध में लिखते है- "भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को हटाकर विश्वमैत्री को और भी सुदृढ़ बना सकते है।"[5] अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र बातचीत का है। विश्व में सबसे अधिक मात्रा में बातचीत का ही अनुवाद किया जाता है। आज हर मनुष्य मातृभाषा में ही बोलता है। लेकिन जब दो अलग-अलग भाषा-भाषाई एक दूसरे से मिलते हैं तो उनके पास अनुवाद के बिना दूसरा कोई साधन नहीं है जिसके द्वारा वे एक दूसरे से संपर्क स्थापित कर सके। बातचीत के क्षेत्र के बाद अनुवाद की व्याप्ति पत्राचार के क्षेत्र में अधिक मात्रा में दिखाई देती है। यह पत्राचार विविध स्तरों पर होता है जैसे- व्यापार, प्रशासन, न्यायालय, बैंक, शोधकार्य आदि सभी क्षेत्रों में पत्राचार का महत्व अनन्य साधारण है। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कार्यालयों में हमेशा अनुवादकों की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह कंपनियां अपनी ही भाषा में पत्र-व्यवहार करना पसंद करती हैं। ब्रिटन, फ्रेंच, जर्मनी, चीन आदि जैसे देशों में तो उनकी भाषा में ही पत्र-व्यवहार होता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। अनुवाद की अनिवार्य आवश्यकता का क्षेत्र विधि और न्याय का है। भारत जैसे संघराज्य में आज भी उच्च तथा उच्चतम अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी होती है। हमारे यहाँ के कानून भी अंग्रेजी भाषा में बनाए, लिखे, छपे तथा सुने एवं सुनाएँ जाते हैं। कागज़ात प्रादेशिक भाषा में, पैरवी अंग्रेजी में और निर्णय भी अंग्रेजी में ऐसी स्थिति में अनुवाद के बिना काम नहीं चल सकता।

आज विज्ञान, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति हुई है। विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोध, अध्ययन और लेखन हो रहा है। और इसी कारण विकसित देशों की प्रगति में सर्वाधिक योगदान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का रहा है। अमरीका, जापान, चीन, रशिया, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड आदि जैसे अनेक देश विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्याधिक प्रगति कर चुके हैं। भारत जैसा विकसनशील देश अपनी प्रगति के लिए विकसित देशों से वैज्ञानिक और प्रोद्योगिक ज्ञान चाहता है। आज हमारे पास इन विकसित देशों की वैज्ञानिक और प्रोद्योगिक से संबंधित नई-नई उपलब्धियों एवं विकास की जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता है। वैज्ञानिक और प्रोद्योगिक साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में हमें सतर्क रहना चाहिए।

संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। संचार के महत्वपूर्ण माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो और दूरदर्शन है। आज संचार माध्यमों से विश्व नजदीक आ रहा है। समाचार पत्रों के पास जो समाचार, सरकारी सूचना, न्यूज, एजेंसिज, प्रादेशिक संवाददाताओं के द्वारा आते हैं उनमें प्रादेशिक भाषा के समाचार अगर छोड़ दे तो शेष सारी सामग्री अन्य भाषा से अनूदित करनी पड़ती है। फिल्म संचार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। एक भाषा में लोकप्रियता प्राप्त की हुई फिल्म कितनी भी मनोरंजक क्यों न हो, उस भाषा से अनजान लोग उसका

आनंद नहीं ले सकते ऐसी स्थिति में अनुवाद ही अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, व्यवसाय, राजनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है। आज विश्व संस्कृति के निर्माण के लिए विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान आवश्यक है और यह कार्य केवल अनुवाद से ही संभव है। वर्तमान युग में पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति की ओर झुक गई है। अतः यह इसी बात का प्रमाण है कि आज अनुवाद के द्वारा ही विश्व साहित्य का निर्माण हो रहा है। आज केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 एवं राष्ट्रपति के आदेश तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रशासनिक कार्य, प्रशासकीय प्रक्रिया, साहित्य, मुद्रण, लेखन, पत्राचार, रबर मोहरें, साइन बोर्ड जैसी सभी द्विभाषिक होने के कारण अनुवाद का महत्व बढ़ गया है। विश्व में शांति बनाए रखने हेतु अंतरराष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में विशेष रूप से अगर देखा जाए तो मौखिक अनुवाद व्यापक मात्रा में होता है। किसी भी अंतरराष्ट्रीय सभा, सम्मेलन अथवा परिषदों में संवाद अनुवाद की सहायता लेना आवश्यक बन जाता है। प्रत्येक देश में विभिन्न देश के राजदूत अथवा प्रतिनिधियों का संवाद अनुवाद के सहारे ही होता है। ऐसे वक्त द्विभाषिक अथवा अनुवादक के माध्यम से उनकी चर्चा सफल कराने का प्रयत्न किया जाता है। अतः एक दूसरे देश को समझने में अनुवाद ही अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि जिस प्रकार किसी देश की अंतर्गत प्रगति के लिए अनुवाद की आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार पूरे मानव समाज की प्रगति के लिए भी वह अनिवार्य है। अतः विश्व में संभवतः एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ अनुवाद एक वरदान के रूप में विद्यमान नहीं है। अंत में यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि भगवान की तरह अनुवाद की आवश्यकता और व्याप्ति हर जगह उपस्थित है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुवाद निरूपण - डॉ. भारती गोरे, पृ.सं 37, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण - 2014
2. योजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम- डॉ. अम्बादास देशमुख, पृ.सं 476-477, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, संस्करण- 2006
3. विशाल नालंदा शब्द सागर - संपा. श्रीनवलजी पृ.सं 56, आदी बुक डिपो, नई दिल्ली, संस्करण- 2008
4. अनुवाद निरूपण - डॉ. भारती गोरे, पृ.सं 14
5. W.W.W hindinest.com- अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय भी बनाता है- डॉ. शिवन कृष्ण रैना, 15 अगस्त, 2006